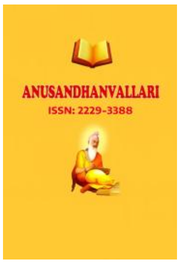

Anusandhanvallari
Vol 2023, No.1
October 2023
ISSN 2229-3388

Diplomacy: A Conceptual Study
राजनयः एक अवधारणात्मक अध्ययन

डॉ० विनोद कुमार
सीनियर एकेडमिक रिसर्च, पोस्ट डॉक्टोरेट, पीएच.डी.
एम.फिल. यू.जी.सी. नेट, एल.एल.बी. एवं व्याख्याता
राजनीति विज्ञान विभाग
राजकीय महाविद्यालय बहादुरगढ़।

सारांश

राष्ट्र राज्यों के मध्य शान्ति, व्यापार और सामाजिक सम्बन्धों के बिना सभ्यता के उचित स्तर पर मानव जाति का अस्तित्व व्यवहारिक रूप से असंभव है और ये चीजें कूटनीति, राज्यों के समायोजित प्रतिनिधित्व और उनक संपर्को के समायोजन पर निर्भर करती है। ऐसा इसलिए है क्योंकि विश्व के विभिन्न राष्ट्रों में राजनीतिक, आर्थिक एवं सामरिक क्षमताएँ एवं अवसर उपलब्ध हैं। इन क्षमताओं और अवसरों को केवल कुशल राजनय के माध्यम से ही प्राप्त किया जा सकता है और संभव बनाया जा सकता है। इस प्रकार से राजनय को "राज्यों का प्रतिनिधित्व करने और राष्ट्रों के मध्य शान्तिपूर्ण सह–अस्तित्व तथा सौहार्दपूर्ण सहयोग के लिए बातचीत करने की कला के रूप में परिभाषित किया जा सकता है। आज का युग राजनय का युग है इसलिए राजनय के विभिन्न पहलुओं का अध्ययन करना अनिवार्य है। क्योंकि वैश्विक स्तर पर विभिन्न राष्ट्रों के व्यवहार को राजनय के माध्यम से ही समझा जा सकता है और यह मौलिक समझ ही स्वस्थ द्विपक्षीय संबन्धों का आधार है।

मूल शब्दः कूटनीति, द्विपक्षीय, एकपक्षीय, राष्ट्रीय हित, कौशल, शक्ति संघर्ष, राजनय।

प्रस्तावना

शोध प्रविधि : इस शोध पत्र को पूर्ण करने के लिए मुख्य रूप से द्वितीय स्रोतों का सहारा लिया गया है। इनमें विभिन्न पत्रिकाओं में छपे लेख तथा अनेक पुस्तकें सम्मिलित हैं।

परिचय : अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों में कूटनीति की अहम भूमिका है क्योंकि जब दो राष्ट्रों के मध्य संबन्धों की स्थापना की जाती है तो एक ऐसी प्रक्रिया को अपनाया जाता है जिसके माध्यम से राष्ट्रीय हितों की पूर्ति के साथ–साथ विश्व शान्ति स्थापित हो और किसी प्रकार का संघर्ष एवं युद्ध की संभावना न उत्पन्न हो। अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर विश्व व्यवस्था बदलती रहती है जिसके परिणामस्वरूप क्षेत्रीय एवं वैश्विक संघर्षों का अस्तित्व में आना स्वाभाविक है। इन संघर्षों एवं समस्याओं को शान्तिपूर्ण तरीकों के माध्यम से समाधान करने की प्रक्रिया या प्रविधि को कूटनीति या राजनय कहा जाता है। [1] इसलिए कूटनीति को राष्ट्र की विदेश नीति का अभिन्न अंग माना जाता है जो कि राष्ट्रीय हित का महत्वपूर्ण उपकरण है। प्रत्येक राष्ट्र अन्य राज्यों के साथ राजनीतिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक संबन्ध स्थापित करने के लिए अपने राजदूतों को अन्य राज्यों में भेजता है। ये राजदूत अपने राज्यों के हितों की रक्षा एवं संवर्धन करने के लिए अपने बौद्धिक व्यवहार, राजनीतिक कौशल, आदर्श एवं यथार्थवादी व्यवहार से अन्य राज्यों में सत्तारूढ़ सरकार एवं जनता के मध्य एक कड़ी का कार्य करते हैं। [2] तथा एक राजनयिक प्रतिनिधि होने के नाते विभिन्न अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलनों में भाग लेना, विदेश आर्थिक नीति एवं अन्य महत्वपूर्ण सूचनाओं को अपने देश भेजना, आपातकाल में अपने नागरिकों को सुरक्षित निकालकर, उनको उनके अपने देश भेजना आदि प्रमुख कार्य करता है। [3] अतः स्पष्ट है कि जिस प्रकार से विदेश मंत्रालय विदेश नीति का तंत्रिका केन्द्र है, उसी प्रकार से राजनयिक प्रतिनिधि इसके दूरस्थ सूत्र हैं, जो केन्द्र और बाह्य जगत दोनों ओर से संपर्क बनाए रखते हैं। [4]

अर्थ एवं प्रकृति– प्राचीनकाल में भी एक राज्य दूसरे राज्य से कूटनीतिक संबन्ध स्थापित करने के लिए अपने राजनयिक भेजता था। प्राचीन काल में कूटनीति का अर्थ सौदे में या लेन–देन में वाक् पाटुल्य या चातुरी, छल प्रपंच, धोखाधड़ी एवं व्यवहार कौशल से लगाया जाता था। इस संदर्भ में जो व्यक्ति कम मूल्य देकर अपने राज्य के लिए अधिक लाभ अपने देश को भेजता था, निश्चित रूप से वह कुशल कूटनीतिज्ञ कहलाता था। परन्तु वर्तमान समय में छल–प्रपंच को कूटनीति नहीं कहा जाता है। वर्तमान वैश्विक समस्याओं का समाधान करने के लिए कूटनीति शब्द का प्रयोग दो राज्यों में शान्तिपूर्ण समझौते के लिए किया जाता है तथा कूटनीति शब्द के स्थान पर राजनय शब्द का प्रयोग प्रचलन में है।[5] अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों

Anusandhanvallari
Vol 2023, No.1
October 2023
ISSN 2229-3388

के विचारकों ने राजनय शब्द का प्रयोग अनेक अर्थों में किया है तथा पुस्तकों, शोध पत्रों एवं दस्तावेजों के रूप में बहुत सा साहित्य उपलब्ध है तथा राजनय शब्द के अर्थ को लेकर अनेक विद्वानों की अलग–अलग व्याख्याएँ हैं। राजनय शब्द अंग्रेजी भाषा के डिप्लोमेसी का हिन्दी अनुवाद है। डिप्लोमेसी शब्द की उत्पत्ति ग्रीक भाषा के शब्द डिप्लाउन से हुई है जिसका अर्थ 'मोड़ना या तह करना' है।

रोमन साम्राज्य के दिनों में सभी प्रकार के पासपोर्ट तथा शाही सड़कों पर चलने के अनुमति पत्रों को दोहरा करके मोहर लगा दी जाती थी। ये मोहरें धातु के पत्रों पर लगाई जाती थी, इसके बाद इन पत्रों को मोड़कर सील कर दिया जाता था। इनको 'डिप्लोमा' कहा जाता था। आगे चलकर, यह 'डिप्लोमा' शब्द का प्रयोग अन्य सभी दस्तावेजों के लिए प्रयोग किया जाने लगा। ये प्रपत्र विदेशियों को विशेषाधिकार, अनेक सुविधाएँ तथा दूसरे देशों के साथ किए गए समझौतों एवं संधियों के लिए प्रयोग में लाए गए कागजों को भी डिप्लोमा कहा जाने लगा। जहां इन दस्तावेजों की संख्या बढ़ने लगी तो इन्हें सुरक्षित अभिलेखागारों में छांटकर रखा जाता था। इसके बाद इनका रखरखाव, संभालकर रखना तथा इनकी उचित व्याख्या करने के लिए सरकारी अधिकारी नियुक्त किए जाने लगे। इस संपूर्ण प्रक्रिया को राजनयिक कृत्य कहा जाने लगा। यही कार्य आगे चलकर कूटनीतिक व्यवसाय कहा जाने लगा। [6] राजनय शब्द की परिभाषा के संदर्भ में विभिन्न विचारकों के अलग–अलग विचार होने के कारण पाठकवृंद के मन में भ्रम उत्पन्न होना स्वाभाविक है। इसके अर्थ को निम्न सारणी के माध्यम से समझने का प्रयास किया गया है।

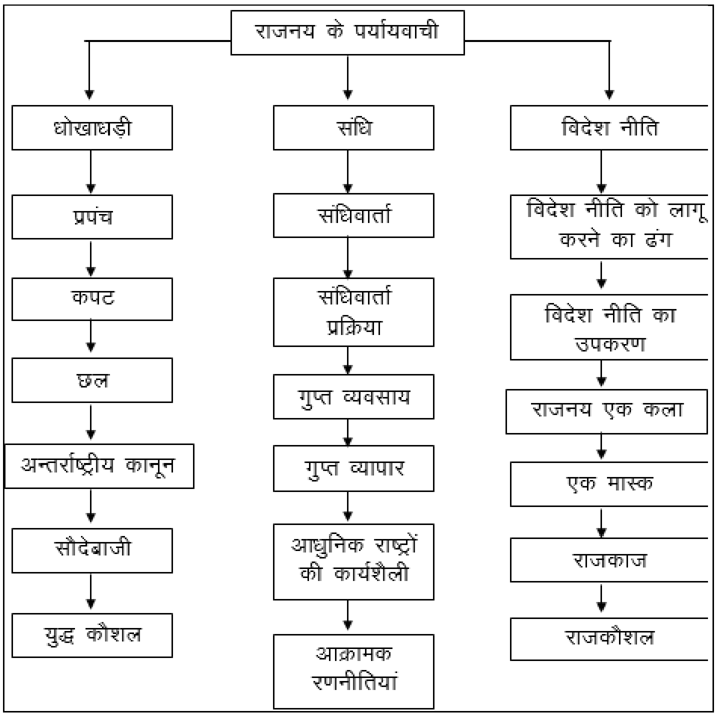

स्रोतः लेखक द्वारा स्वयं सृजित।

उपर्युक्त सारणी से कूटनीति का अर्थ, पूर्णतः स्पष्ट नहीं होता है क्योंकि देश, काल एवं परिस्थितियों के अनुरूप इसका स्वरूप बदलता रहा है।

हेरोल्ड निकोलसन एक प्रतिष्ठित इतिहासकार एवं कूटनीतिक विषय पर एक स्वतंत्र एवं अग्रणी टिप्पणिकार रहे हैं। कूटनीति को एक वैज्ञानिक सिद्धान्त बनाने में इनका उल्लेखनीय योगदान रहा है। एक राजनायिक विचारक के तौर पर उनके दर्शन का स्रोत प्राचीन ग्रीक, रोमन राजनीतिक सिद्धान्त और इतिहास थे। इस संदर्भ में विशेष रूप से अरस्तु और थ्यूसीडाइड्स के लेख और अन्तर्राष्ट्रीय संबन्धों की ग्रोशियन अवधारणाएँ सम्मिलित है। निकोल्सन का कूटनीतिक दर्शन विदेश नीति के प्रमुख तत्वों के साथ उसके संबन्धों पर केन्द्रित था जैसे शक्ति संतुलन की अवधारणा की कार्यप्रणाली। इसके अतिरिक्त उन्होंने राष्ट्रीय चरित्र और प्रतिष्ठा की कूटनीति पर पड़ने वाले प्रभावों का भी अध्ययन किया। यहाँ पर उल्लेखनीय है कि इनके कूटनीतिक दर्शन में प्राचीन ग्रीक, मध्ययुगीन और पुर्नजागरण कूटनीति के साथ–साथ शाही यूरोप की पुरानी कूटनीति और बीसवीं शताब्दी की तथाकथित नई कूटनीति शामिल थी। [7] निकोलसन के अनुसार ''कूटनीति एक कुशल वार्ता के माध्यम से

अन्तर्राष्ट्रीय संबन्धों का प्रबंधन है; यह एक ऐसी विधि है जिसके द्वारा इन संबंधों को राजनयिकों द्वारा समायोजित एवं इनका प्रबंधन किया जाता है। यह राजनयिकों की कला हो सकती है।''[8] अतः निकोलसन ने राजनयिक राजनय के एक वैज्ञानिक, महात्वाकांक्षी एवं मूल सिद्धान्त को विकसित करने में योगदान दिया। जो कि अन्तर्राष्ट्रीय संबन्धों में आखिरकार एवं यथार्थवादी दृष्टिकोण का मिश्रण है।

सी.एम., कान्स्टेंटिनो का तर्क है कि मध्य युग के दौरान ऐसा कोई शब्द प्रचलित नहीं था जो शासन, कला, प्रतिनियुक्ति, बातचीत, विदेश नीति, चातुर्य आदि के संदर्भों में कूटनीति के विषयों को युक्तियुक्त रूप से व्यक्त करता हो, और न ही ऐसा कोई शब्द अस्तित्व में था जिसे बिना किसी पूरक राजनीतिक जुड़ाव के कूटनीति शब्द के विकल्प के रूप में प्रयोग किया जा सकता था।[9] यद्यपि डिप्लोमा वाले शब्दों का प्रयोग मध्य युग के अंत में किया जाने लगा। क्योंकि कूटनीति के 'अग्रदूत' के रूप में कोई सार्थक एवं व्यापक अवधारणा कभी नहीं उभरी। जब कूटनीति राजनीतिक शब्दावली के रूप में व्यवहार में आई तो यह तत्कालीन शर्तों और प्रथाओं पर आधारित थी। परन्तु इस शब्दावली ने इन परिस्थितियों एवं व्यवहार को परिभाषित करने के लिए एक नया सिद्धान्त विकसित किया। तथापि वार्ता एवं राजनीति जैसे शब्द, शैक्षणिक क्षेत्र के कुछ पहलुओं को व्यक्त करते थे। इसके अतिरिक्त इस विषय के क्षेत्र से संबंधित विशेषज्ञों के लिए दूत, राजदूत, मंत्री आदि विशिष्ट उपाधियां दी जाती थी।[10] इसके पश्चात् इसका स्वरूप व्यापक एवं विभिन्न राजशाही कामों के लिए, किया जाने लगा। ऐनसाइक्लोपीडिया ऑफ ब्रिटेनिका के अनुसार प्रारम्भिक कूटनीति का ज्ञान मध्यपूर्व, भूमध्य सागर, चीन और भारत से प्राप्त होता है। मेसोपोटामिया के नगर–राज्यों में विवादों का समाधान करने के लिए जो समझौते किये जाते थे उनके अभिलेख सुरक्षित रख दिये जाते थे और ये अभिलेख 2850 ईसा पूर्व के माने जाते हैं। इसके पश्चात् अक्काडियन पहली राजनयिक भाषा बन गई जो मध्यपूर्व की अन्तर्राष्ट्रीय भाषा के रूप में तब तक काम करती रही जब तक कि इसे अपनी भाषा द्वारा प्रतिस्थापित नहीं किया गया। 14वीं शताब्दी ईसा पूर्व मिस्र के दरबार और हिती राजा के मध्य राजनयिक पत्राचार एक विशिष्ट शैली में होता था। उल्लेखनीय है कि क्यूनिफार्म गोलियों पर अक्काडियन भाषा में संदेश अंकित होता था। अतः इन गोलियों का आदान–प्रदान करके संदेश प्रेषित किए जाते थे।[11] यह तरीका गुप्त और अपनी बात को एक विशिष्ट शैली में व्यक्त करने का माध्यम भी था। ऐदम वाटसोन के अनुसार ''राजनयिक संवाद अन्तर्राष्ट्रीय समाज का साधन है दूसरों के दृष्टिकोण के प्रति जागरूकता और सम्मान पर आधारित एक सभ्य प्रक्रिया भी है। ऐसा इसलिए है क्योंकि विचारों के निरंतर आदान–प्रदान और हितों के टकराव के लिए पारस्परिक रूप से स्वीकार्य समाधान खोजने का प्रयास; जागरूकता और सम्मान को बढ़ाता है।''[12] अर्नेस्ट स्टोव ने कूटनीति को परिभाषित करते हुए बताया है कि ''कूटनीति स्वतंत्र राज्यों की सरकारों के बीच आधिकारिक संबन्धों के संचालन में बुद्धि और चातुर्य का अनुप्रयोग है जो कभी–कभी जागीरदार राज्यों के साथ उनके संबंधों तक भी विस्तारित होती है; या संक्षेप में, शान्तिपूर्ण तरीकों से राज्यों के बीच व्यापार का संचालन;[13] इसके अतिरिक्त ई.जे. जॉहान्सन ने कूटनीति को एक अलग रूप में परिभाषित किया है। ये मानते हैं कि कूटनीति को एक जटिल एवं उत्कृष्ट उपकरण के रूप में परिभाषित एवं वर्णित किया जा सकता है जो कि अन्तर्राष्ट्रीय संबंधों के केन्द्र में संचालित होने वाली शक्तियों को मापती है। कूटनीति का प्रयोग अप्रत्याशित अन्तर्राष्ट्रीय संकटों का समाधान, असहमति समाप्त करने तथा द्विपक्षीय संबंधों में सुधार करने के लिए किया जाता है।''[14] अर्थात् यह एक ऐसा उपकरण है जिसके माध्यम से वैश्विक स्तर पर संचालित होने वाली शक्ति संतुलन की प्रकृति तथा इस प्रक्रिया से उत्पन्न समस्याओं का समाधान किस प्रकार किया जा सकता है, यह भी बताने का प्रयास करता है। हंस जे. मार्गेन्याऊ ने कूटनीति को बड़े व्यापक अर्थों में परिभाषित किया है। उनका मानना है कि कूटनीति का संबन्ध राज्यों के बीच और राज्यों के मध्य संबंधों और अन्य कारकों के प्रबंधन से है। यदि राज्य के दृष्टिकोण से देखा जाए तो कूटनीति का संबन्ध विदेश नीति को आकार प्रदान करना, तथा क्रियान्वित करने से है, क्योंकि यह एक ऐसा साधन है जिसके द्वारा राज्य अपने औपचारिक और अन्य प्रतिनिधियों के साथ–साथ अन्य अभिनेताओं के माध्यम से पत्राचार तथा व्यक्तिगत वार्ता का उपयोग करके विशेष हितों को स्पष्ट, समन्वित और सुरक्षित करते हैं। इसके अतिरिक्त विभिन्न स्तरों पर विचारों का आदान–प्रदान पैरवी, यात्रा, धमकियां तथा अन्य संबंधित गतिविधियां भी कूटनीति का हिस्सा हैं।[15] पीटर मार्शल ने कूटनीति की अवधारणा की व्याख्या कुछ महत्वपूर्ण एवं बुनियादी अर्थों तथा विभिन्न पहलुओं को स्पष्ट करने के लिए किया। पहला, विदेश नीति के पर्याय के रूप में या इस नीति के संचालन के तरीके के रूप में। दूसरे, बातचीत या शांतिपूर्ण प्रकृति के अन्य उपायों के माध्यम से शान्ति स्थापित करने के लिए एक नियामक प्रक्रिया के रूप में। तीसरा, विदेश सेवाओं में कार्यरत लोगों की एक टीम के रूप में। और अन्त में यह शब्द पेशेवर, राजनयिकों की प्रतिभा या कौशल को निर्दिष्ट करता है।[16] वेबसटर अंग्रेजी शब्दकोष में इसी प्रकार के अर्थ को स्पष्ट किया है इनका मत है कि कूटनीति एक ऐसी कला या विज्ञान है जिसके माध्यम से सरकारी अधिकारी विभिन्न, राष्ट्रों के मध्य विभिन्न विवादों एवं समस्याओं के बारे में बातचीत और अन्य

साधनों के माध्यम से शान्तिपूर्ण संबंधों का संचालन कर सकते हैं। इस प्रक्रिया में इस बात का ध्यान रहता है कि सामान्य लोगों को कोई नुकसान न हो और उन्हें विभिन्न विवादों से किस प्रकार निकाला जाए। अतः लोगों को संभालने, बातचीत को व्यवस्थित एवं प्रबन्धित करने के इस कौशल को कूटनीति कहते हैं।[17]

ऑक्सफोर्ड अंग्रेजी शब्दकोश के अनुसार ''सन्धि वार्ता के माध्यम से अन्तर्राष्ट्रीय संबन्धों की व्यवस्था कूटनीति कहलाती है। यह एक ऐसी पद्धति है जिसके द्वारा राजदूत एवं दूत इन सम्बन्धों की व्यवस्था करते हैं। यह एक प्रकार का कूटनीतिक कौशल है।''[18] ए.एम.के. आर्गेन्सकी ने भी लगभग इसी प्रकार के मत व्यक्त किए हैं। इनके अनुसार ''कूटनीति दो अथवा दो से अधिक राष्ट्रों के सरकारी प्रतिनिधियों के मध्य होने वाली सन्धि वार्ता की प्रक्रिया को स्पष्ट करती है।''[19]

ओल्सन के मतानुसार ''कूटनीति अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति का एक सूत्रीकरण और एक दिशा है; और कूटनीति एक संचार और एक एहसास है। निश्चित रूप से अन्तर्राष्ट्रीय संबन्धों की मशीनरी के लिए एक स्नेहक है।''[20] स्मिथ मानते हैं कि ''यह एक ऐसी राजनायिक गतिविधियों को संचालित करती है जिसके मूल में अनुनय विनय के साथ–साथ अवपीडक संसाधन भी छिपे होते हैं ताकि राष्ट्रीय हितों का संवर्धन किया जा सके।''[21] जबकि बास्टर्न का मत है कि ''कूटनीति अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति से संबन्धित विषयों के बारे में सलाह, अभिकल्प, कार्यान्वयन, समन्वय स्थापित करती है। इसके अतिरिक्त विशिष्ट और व्यापक हितों को सुनिश्चित करने के साथ–साथ उनकी प्राप्ति के उपाय बताना तथा विभिन्न देशों और अन्य अभिनेताओं के मध्य संबन्धों को प्रबंधित करने के लिए जिम्मेदार है।''[22] के.एम. पणिकर के अनुसार ''अन्तर्राष्ट्रीय राजनति में जो कूटनीति प्रयोग में लाई जाती है, अन्य देशों के साथ संबंध स्थापित करते हुए अपने हितों को आगे बढ़ाने की कला है।''[23] आर.बी. मावट कहते हैं ''कूटनीति एक ऐसी कला है जिसके माध्यम से राज्यों का प्रतिनिधित्व तथा किसी स्तर पर समझौते किए जा सकते हैं।''[24] इस संदर्भ में यदि इन संबन्धों को दोनों पक्षों द्वारा एक समान चातुर्य, विचारशीलता और विचार–विमर्श के साथ लंबे समय तक लगातार जारी रखा जाए तो पीढ़ियों के लिए आधिकारिक मित्रता और पारस्परिक समायोजन की आदत का आधार स्थापित किया जा सकता है।[25] राबर्टो रेमेला का तर्क है कि कूटनीति शब्द का प्रयोग अन्तर्राष्ट्रीय संबन्धों में दुरूपयोग हुआ है। यथार्थ में देखा जाए तो कूटनीति एक ऐसा व्यवसाय है जिसके साथ अनेक क्रियाएं होती हैं यह विश्व के कुछ ऐसे व्यवसायों का प्रतिनिधित्व करती है जो मानवीय क्रियाओं के प्रत्येक पहलू को आत्मसात करती है। इसका संबंध मुख्यतः शक्ति, राजनीति, आर्थिक शक्ति तथा विभिन्न विचारधाराओं के संघर्ष से है।[26] मैगलहेस कूटनीति को साधारण रूप से चार दृष्टिकोणों से देखते हैं: विदेश नीति, विदेश नीति का एक साधन, अन्तर्राष्ट्रीय वार्ता और राजनयिकों की गतिविधियां [27] जबकि शार्प कूटनीति को राज्य कौशल, विदेश नीति और अन्तर्राष्ट्रीय संबंधों के साथ–साथ अभ्यासकर्ताओं द्वारा विदेश नीति बनाने के पर्याय के रूप में परिभाषित करते हैं। [28] जबकि मरे कूटनीति से संबन्धित तीन प्रकार के दृष्टिकोण की व्याख्या करते हैं: पारंपरिक राज्य – आधारित दृष्टिकोण, उभरते दृष्टिकोण जो नए, गैर–राज्य अभिनेताओं की भूमिका पर ध्यान केन्द्रित करते हैं; और नवीन दृष्टिकोण जो कूटनीति के पारंपरिक और नए रूपों के बीच सह–अस्तित्व और यहां तक कि सहयोग को व्यक्त करते हैं।[29] बैरिज इसके समन्वित स्वरूप की वकालत करते हैं इनके अनुसार कूटनीति पारम्परिक और प्रत्यक्षवादी विचारधारा का प्रतीक है। जिसके माध्यम से राज्यों की विदेश नीतियों के उद्देश्यों की प्राप्ति करने में सक्षम बनाना है। [30] हालांकि 20वीं सदी के सबसे अत्याचारी शासकों में एक जोशल स्टालीन के मतानुसार कूटनीति और वास्तविक कार्यो के मेल की कोई आवश्यकता नहीं है, क्योंकि अच्छे शब्द बुरे कार्यों को ढकने के लिए एक मुखौटा है। ईमानदार कूटनीति के अस्तित्व में रहने का वही अवसर है, जो सूखे पानी या लकड़ी के लोहे के समान है। [31] निश्चित रूप से ये कूटनीति के यथार्थवादी स्वरूप पर ज्यादा बल देते हैं और इनका दृष्टिकोण राजनय के व्यवहारिक पक्ष को अधिक व्यक्त करता है बजाय नैतिक पक्ष के।

कलाजविट्स के अनुसार कूटनीति एक रणनीति है जिसके माध्यम से युद्ध के लक्ष्यों को प्राप्त किया जाता है। अर्थात् युद्ध के लक्ष्यों को विभिन्न स्तरों पर प्राप्त करने की जो कला होती है उसे कूटनीति कहा जाता है और यह इस बात पर निर्भर करता है कि एक राष्ट्र अपने राष्ट्रीय हितों को युद्ध के दौरान किस प्रकार की कूटरचना एवं कूटयोजना के अनुरूप सफलता प्राप्त करता है। इस संदर्भ में इन्होंने अपनी पुस्तक 'आन वार' में व्यापक रूप से कूटयोजना की व्याख्या करते हुए कहा है कि सबसे श्रेष्ठ एवं प्रभावी कूटनीति अपने शत्रु राष्ट्र से संख्यात्मक एवं गुणात्मक रूप से अधिक सुदृढ़ एवं शक्तिशाली होना है इस सिद्धान्त को उन्होंने सुरक्षात्मक रणनीति का नाम दिया है।[32] अर्थात् आक्रमण की अपेक्षा अपने

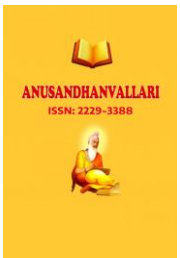

आप को सुरक्षित रखना एवं अधिक रक्षात्मक उपायों का प्रयोग करना श्रेयकर है। परंतु यदि मेकियावेली के राजदर्शन का आधारभूत सिद्धान्त शक्ति और सत्ता है शक्ति को वह साध्य मानता है इनका संपूर्ण राजनीतिक चिन्तन शक्ति प्राप्त करने, शक्ति को संभालने तथा शक्ति का विस्तार करने तथा इस प्रक्रिया में आए व्यवधानों को किस प्रकार समाप्त किया जाए, इस रणनीतिक कौशल पर बल देता है और इसी को उन्होंने एक कुशल शासक की यथार्थवादी कूटनीति बताया है।[33] मैकियावेली ने राष्ट्रीय हितों को प्राप्त करने के लिए शक्ति के अतिरिक्त कौशल, प्रचार तथा गोपनीयता को महत्वपूर्ण उपकरण माना है। मैकियावेली शक्ति के संदर्भ में सुझाव देते हैं कि एक विवेकशील शासक को शक्ति का प्रयोग करना चाहिए। क्योंकि राष्ट्रीय हितों को पूर्ण करने के लिए यदि लोकव्यवहार के विपरित एवं अनुचित साधनों का प्रयोग भी किया जाता है तो यह नैतिक माना जाएगा। क्योंकि जब किसी राष्ट्र का अस्तित्व संकट में हो तो ऐसी स्थिति में शासकों को विभिन्न सन्धियों एवं समझौतों को तोड़कर हिंसा, क्रुरता, विश्वासघात तथा धोखाधड़ी आदि उपकरणों का सहारा लेना परमावश्यक है क्योंकि एक शासक का सर्वोपरी कर्तव्य अपने राष्ट्र को प्रत्येक परिस्थिति में सुरक्षित रखना है।[34] परन्तु इस प्रकार का युद्ध लम्बे समय तक नहीं जारी रखना चाहिए क्योंकि इसमें जान–माल का नुक्सान होने की संभावना अधिक है इसलिए शासक के अन्दर शेर और लोमड़ी दोनों के गुणों का होना परमावश्यक है ताकि परिस्थितियों के अनुरूप व्यवहार किया जा सके और अपने छिपे हुए मनतव्यों का प्रसार एवं प्रचार धन, बल एवं धर्म आदि का सहारा लेकर करना किया जा सके। अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर युद्ध संबंधी रणनीति तथा योजनाओं को लागू एवं उनका संचालन करते हुए पूर्ण रूप से गोपनियता का ध्यान रखना चाहिए। इस संदर्भ में यह कतई आवश्यक नहीं है कि नैतिकता, आदर्श एवं दयालुता का ख्याल रखा जाए।[35] क्योंकि राज्यों का शासन नैतिकता के नियमों के अनुरूप नहीं चलाया जा सकता है यद्यपि नैतिक पक्ष विदेश नीति का अल्पकालीन एवं लोक लुभावना संकेतक हो सकता है परन्तु जहाँ तक दीर्घकालीन मंतव्यों की बात है वहाँ पर शासकों को अपने राष्ट्रीय हितों के संवर्धन के लिए द्वीपक्षीय लाभ, कूटनीतिक कौशल, प्रसार, विवेकपूर्ण शक्ति का प्रयोग तथा युद्ध आदि उपकरणों का सहारा लेना परमावश्यक है।

लार्डग्रे ने भी इसके शक्ति राजनीति के सिद्धान्त का समर्थन किया था और कहा था कि राज्य कूटनीति के नियमों से नियंत्रित होते हैं, नैतिकता के नियमों से नहीं। यह सत्य है कि व्यक्ति अपने स्वभाव या व्यवहार में भले ही परिवर्तन लें आए, परन्तु आधुनिक राज्य मैकियावेली के बनाए गए नियमों एवं मार्गों से हटकर नहीं चल सकते। दुनिया के देशों का प्राचीन या मध्यकालीन इतिहास ही नहीं आधुनिक युग की अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति भी इसी सच्चाई की पुष्टि करती है कि राज्यों के आपसी संबन्धों में शक्ति की भूमिका बहुत अधिक महत्वपूर्ण रही है।[36]

अतः उपरोक्त परिभाषाओं के माध्यम से विभिन्न अन्तर्राष्ट्रीय विद्वानों एवं शोधकर्ताओं ने राजनय का अर्थ स्पष्ट करने का प्रयत्न किया है। परन्तु उपर्युक्त परिभाषाएं राजनय के अर्थ को पूर्ण रूप से स्पष्ट नहीं करती है ऐसा इसलिए है कि देश, काल और परिस्थितियों के अनुसार सिद्धान्तों का निर्माण होता है और इन सिद्धान्तों एवं राजनीतिक व्यवहारों के आधार पर ही राजनय की प्रकृति निर्धारित की जाती है।

राजनय की विशेषताएँ–पामर एवं पर्किंस ने राजनय की कुछ विशेषताओं का वर्णन किया है जो इस प्रकार से है

1. निश्चित रूप से राजनय एक ही तरह है इसको न तो नैतिकता की श्रेणी में रखा जा सकता है, और न ही अनैतिक की श्रेणी में। इसकी व्याख्या तो इसके प्रयोग करने वाले की योग्यताओं और अर्थों पर निर्भर करता है।

2. राजनय को विदेशी विभागों, दूतावासों, दूतकार्यों, उच्चायुक्तों, राजपुरुषों तथा विश्वस्तर पर व्याप्त विशेष अभियानों के अनुरूप संचालित किया जाता है।

3. राजनय की प्रकृति द्विपक्षीय तथा बहुपक्षीय होती है।

4. वर्तमान समय में अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलनों, अंतर्राष्ट्रीय संगठनों, क्षेत्रीय प्रबन्धों तथा सामूहिक सुरक्षा पहलों के परिणामस्वरूप कूटनीति के बहुपक्षीय स्वरूप का महत्व बढ़ गया है।

5. राजनय के माध्यम से विभिन्न राष्ट्रों के सामान्य विचारों से लेकर शान्ति और युद्ध जैसे व्यापक मामलों का समाधान भी किया जाता है। परन्तु यदि, राजनय सफलता की कसौटी पर नहीं उतरता है तो स्वाभाविक रूप से युद्ध या बड़ा संकट पैदा हो जाता है।" [37]

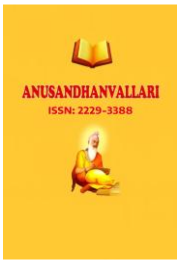

राजनय के उद्देश्य

वर्तमान समय में राजनय का उद्देश्य राष्ट्रीय हितों का संवर्धन करना है। और राजनय विदेश नीति का एक उपकरण है। अतः राजनय के माध्यम से विदेश नीति के लक्ष्यों को प्राप्त किया जाता है। राजनय के निम्नलिखित उद्देश्य हैं–

1. राष्ट्रीय हितों का संवर्धन
2. मैत्रीपूर्ण संबन्ध स्थापित करना
3. राज्य की सीमाओं की रक्षा करना
4. राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक विकास के लिए अनेक अवसरों के लिए यथासंभव प्रयास करना।
5. क्षेत्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तर की शक्ति संरचना में अपने देश के राष्ट्रीय लक्ष्यों को विभिन्न मंचों पर रखना।
6. पारस्परिक सहयोग एवं युद्ध की स्थिति को टालना।
7. अन्ततः कुशलतापूर्वक युद्ध का संचालन।
8. मित्र राष्ट्रों से संपर्क तथा शत्रुओं से तटस्थता बनाए रखना।मॉर्गेन्थाऊ ने राजनय के उद्देश्यों को निम्न प्रकार से स्पष्ट किया है–
    1. राष्ट्रीय शक्ति के आधार पर राष्ट्रीय हितों तथा उद्देश्यों का निर्धारण करना।
    2. अन्य राष्ट्रों के उद्देश्यों तथा इन उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए वास्तव में तथा संभावित रूप से उपलब्ध शक्ति का आकलन करना।
    3. यह निर्धारित करना कि ये विभिन्न उद्देश्य किस सीमा तक एक–दूसरे के साथ संगत है।
    4. अपने उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए उपयुक्त साधनों का प्रयोग करना। [39]

कूटनीति की प्रविधियां

जब कोई देश अपने हितों को संवर्धित करने के लिए किसी दूसरे देश को बिना किसी विवाद के अपनी बात को स्वीकृत करवा लेता है तो अन्तर्राष्ट्रीय संबन्धों में यह संदेश जाता है कि अमुक राष्ट्र अपने विवेकपूर्ण व्यवहार तथा राष्ट्रीय शक्ति एवं क्षमता के अनुरूप कूटनीति करने में सिद्धहस्त है। कोई भी राष्ट्र अन्तर्राष्ट्रीय संबन्धों में बिन्दुवार ढंगों से कूटनीति करते हैं

1. *किसी राष्ट्र को सहायता देकर :* अन्तर्राष्ट्रीय संबन्धों में विभिन्न राष्ट्र अपने उद्देश्यों की पूर्ति के लिए समय–समय पर राजनीतिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक संदर्भों में एक दूसरे की सहायता करके कूटनीति करते हैं।
2. *लोभ देकर :* अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर यदि अपना अस्तित्व बनाए रखना है तो दूसरे राष्ट्र को प्रलोभन देकर अपने लक्ष्यों की पूर्ति करनी चाहिए। क्योंकि प्रवधि में विनय का पक्ष भी होता है।
3. *बहला फुसलाकर :* यद्यपि वर्तमान समय में कोई भी राष्ट्र एक दूसरे राष्ट्र पर प्रत्यक्ष रूप से प्रभाव नहीं जमा सकता तथापि राजनीतिक एवं आर्थिक अवसरों के संदर्भ में सौदेबाजी की जा सकती है।[40]

4. *अपना प्रभाव व्यक्त करके :* राजनीति विज्ञान का प्रत्येक विद्यार्थी शक्ति की धारणा को अच्छी प्रकार से समझता है। शक्ति प्रदर्शन, शक्ति का विस्तार तथा शक्ति को किस प्रकार से व्यवस्थित करना है आदि माध्यमों से अपने हितों को पूर्ण करना चाहिए। लेटिन लेखक जिन्होंने अपनी पुस्तक डी रे मिटिटरी के माध्यम से यह बताने का प्रयास किया है कि यदि आप शान्ति की इच्छा रखते हैं, तो आपको युद्ध के साथ निपटना होगा, चाहे वह वास्तविकता में आग और रक्त के साथ या केवल इसकी धमकी के साथ हो। शक्ति, जो सदैव इतनी आकर्षक है, एक शर्मीली युवती हैः जैसे ही आप उसका पीछा करेंगे वह आपसे दूर जाएगी। वह क्रूर और घृणित लग सकता है, परन्तु केवल तभी जब आपको उसके भाई युद्ध की स्वीकृति प्राप्त हो, आप उसका हाथ प्राप्त कर सकते हैं। मूल कहावत को उल्टा करके स्थिति को सटीक रूप में समझा जा सकता है। यदि आप शान्ति चाहते हैं तो केवल शैन्य शक्ति के माध्यम से ही इसे प्राप्त कर सकते हैं। और यदि आप युद्ध चाहते हैं तो एक विनम्र शांतिवादी के व्यर्थ भ्रम में केवल शांति के लिए तैयारी करते रहें। युद्ध तुम्हें ढूंढने के लिए आएगा।[41]

5. *बौद्धिक बल का प्रयोग करके :* अन्तर्राष्ट्रीय कूटनीति में सारा खेल बौद्धिकता का ही होता है यदि एक राष्ट्र को दूसरे राष्ट्र से कुछ प्राप्त करना है तो व्यवहारकुशलता के आधार पर अपने लक्ष्यों को प्राप्त किया जा सकता है। इसके अन्तर्गत राजनयिक संवाद, अन्तर्राष्ट्रीय समाज की नागरिक प्रक्रिया, विश्व व्यवसाय का समतावादी स्वरूप तथा विदेश नीति के प्रति जागरूकता आदि साधन प्रयोग में लाए जाते हैं। विचारों के आदान–प्रदान तथा पारस्परिक हितों के टकराव की स्थिति से निपटने के लिए स्वीकार्य समाधान खोजने का प्रयास किया जाना चाहिए क्योंकि यह प्रक्रिया जागरूकता, पारस्परिक सम्मान, समतामूलक तथा समन्वय से संबन्धित प्रक्रिया भी है।

6. *सुरक्षा देकर :* यद्यपि वर्तमान समय में राष्ट्र–राज्य व्यवस्था कायम है और प्रत्यक्ष रूप से कोई भी राष्ट्र दूसरे राष्ट्र पर आक्रमण नहीं कर सकता है अतः युद्धों को औचित्यपूर्ण ठहराने के लिए एक दीर्घ एवं व्यवस्थित रणनीति जरूरी होती है। अतः इस संदर्भ में निवारक राजनय का प्रयोग करते हुए अन्य राष्ट्रों की सुरक्षा की जा सकती है और अपना उद्देश्य प्राप्त किया जा सकता है।

7. *पुरस्कार एवं सुविधाएं देकर :* अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति का स्वरूप गत्यात्मक है तथा विश्व व्यवस्था बदलती रहती है। और अनेक प्रकार के विवाद एवं संघर्ष उत्पन्न होते रहते हैं ऐसे में संघर्षों का शान्तिपूर्ण समाधान खोजने के लिए एक राष्ट्र दूसरे राष्ट्र को पुरस्कार एवं सुविधाएं देकर अपने उद्देश्यों की पूर्ति कर सकता है।[42]

8. *हित दिखाकर :* प्रायः राष्ट्र अन्तर्राष्ट्रीय संबन्धों में दूसरे राष्ट्र को हित दिखाकर प्रभावित करते हैं क्योंकि कोई भी राष्ट्र तभी प्रभावित होता है जब उसका हित सामने वाले राष्ट्र के साथ परिलक्षित हो। यदि द्वीपक्षीय लाभ स्पष्ट नहीं होंगें तो कोई भी राष्ट्र दूसरे राष्ट्रों के साथ संबन्ध स्थापित नहीं करेगें। इस संदर्भ में राजनीतिक, आर्थिक एवं सामरिक हित दिखाकर दूसरे राष्ट्र को प्रभावित किया जा सकता है।[43]

राजनय के कार्य

एक सफल राजनय का अन्तिम उद्देश्य अपने राष्ट्र के राष्ट्रीय हितों का संवर्धन करना है। प्राचीन काल से ही सभी राष्ट्र राजनय के माध्यम से भयंकर से भयंकर संकटों एवं संघर्षों का समाधान शान्तिपूर्ण तरीकों से खोजते आए हैं।[44] राजनय के कार्यों के संदर्भ में विभिन्न विद्वानों ने अलग–अलग मत दिए हैं। इनमें मुख्य रूप से पामर एवं पर्किंस, कौटिल्य, के.एम. पनिक्कर, किवन्सी राइट, ओपनहीम, हँस. जे. मॉर्गेन्याऊ, लियो, बी. पौलाद, आदि हैं। इनके अनुसार राजनय के कार्य निम्नलिखत हैं

1. अपने देश के हितों तथा अधिकारों का संवर्धन एवं संरक्षण।

2. क्षेत्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय मंचों पर देश का प्रतिनिधित्व।

3. पर्यवेक्षण।

4. प्रतिवेदन।

5. समझौते तथा सन्धियां। [45]

निष्कर्ष

कूटनीति के सभी पहलूओं का विश्लेषण करने के पश्चात् यह कहा जा सकता है कि आज के युग में राष्ट्रीय शक्ति में वृद्धि, विश्वशान्ति स्थापना तथा पारस्परिक संबन्धों का सौहार्दपूर्ण तरीके से संचालन एक प्रभावकारी, औचित्यपूर्ण एवं विवेकसम्मत कूटनीति के माध्यम से किया जा सकता है। क्योंकि हम एक ऐसे युग में प्रवेश कर चुके हैं जहाँ पर पूर्ण युद्ध की संभावना बहुत कम रह गई है और सीमित युद्ध का प्रचलन है। ऐसा इसलिए है क्योंकि पूर्ण युद्ध में व्यापक रूप से नुकसान होता है और अन्ततः समझौता करना पड़ता है या फिर शत्रु की अधिनता स्वीकार करनी पड़ती है। अतः कूटनीति के माध्यम से बीच बचाव तथा उन तरीकों को खोजा जाता है जिसमें कम नुकसान हो और संबन्धित देश की एकता, अखण्डता तथा अस्तित्व बचा रहे। इस दृष्टिकोण को मानने वाले विद्वानों ने सुरक्षात्मक उपायों की वकालत की है। परन्तु यदि कोई राष्ट्र इनकी अपेक्षा महाशक्तियों को चुनौती देता है तो उस देश के विरूद्ध नाकेबंदी, एकपक्षीय कार्यवाही तथा अनेक प्रकार के राजनीतिक एवं आर्थिक प्रतिबन्ध लगा दिए जाते हैं। ईरान, इराक, अफगानिस्तान, उत्तर कोरिया, रूस, सिरिया तथा अन्य सदर क्षेत्र के राष्ट्रों के उदाहरण देख सकते हैं। अतः आज के वैश्विकृत युग में राजनीतिक, आर्थिक, सामरिक, सांस्कृतिक विकास, वैश्विक चुनौतियों का सामना करने के लिए तथा अन्तर्राष्ट्रीय सहयोगपूर्ण वातावरण में संधिवार्ताओं के माध्यम से राष्ट्रों के मध्य मित्रवत संबन्ध स्थापित करके राष्ट्र–राज्य व्यवस्था को स्थापित किया जा सकता है ताकि अन्तर्राष्ट्रीय व्यवस्था में एक समतामूलक समाज की स्थापना की जा सके।

संदर्भ

1. जे.डी. डेरियन, *कूटनीति पर : पश्चिम अलगाव की एक वंशावली,* बलैकवैल, ऑक्सफोर्ड, 1987, पृ. 119–20. इसके अतिरिक्त अधिक जानकारी के लिए देखें जे. चाहाईन, *सार्वजनिक कूटनीति : अवधारणात्मक रूपरेखा,* मैक्गिल विश्वविद्यालय, 2010, मॉनट्रेल प्रमुख संदर्भ 77.

2. मेजबान देशों में अन्य देशों के सरकारों के प्रतिनिधि को राजदूत के रूप में जाना जाता है। इस्लाम ''प्रतिनिधियों के कार्य एवं भूमिका'', संदर्भ : *शोध दरवाजा,* जुलाई 2023.

3. बनर्जी, ''निर्णय–निर्माता प्रक्रिया में राजनयिकों की भूमिका'', कुछ मामलों का अध्ययन'' भारत, *त्रैमासिक पत्रिका,* वा. 35, संख्या 2, 1979, पृ. 207–222

4. हंस. जे. मॉरगेन्थाऊ, *राष्ट्रों के मध्य राजनीति,* हरियाणा साहित्य अकादमी, पंचकूला 2003, पृ. 635. इस पहलु के लिए देखें एस. मुरे, राजनय और राजनयिक अध्ययन का वर्तमान एवं भविष्य'', *अन्तर्राष्ट्रीय अध्ययन समीक्षा,* अंक 13, 2011

5. आर.एफ. ट्रेजर, ''युद्ध और शान्ति की कूटनीति'', *राजनीति विज्ञान की वार्षिक समीक्षा,* वा. 19, अंक 1, 2016, पृ. 205–228 तथा *एनसाइक्लोपीडिया ऑफ ब्रिटेनिका* 25 जून 2020

6. कूटनीति शब्द फ्रेंच के माध्यम से प्राचीन ग्रीक डिलोमा से लिया गया है जो डिप्लो से बना है। जिसका अर्थ ''दो में मुड़ा हुआ'', और प्रत्यय – मा, जिसका अर्थ है ''एक वस्तु'' मुड़े हुए दस्तावेज ने वाहक को एक विशेषाधिकार प्रदान करता है, जो आम तौर पर यात्रा करने की अनुमति देता है। और यह शब्द उन दस्तावेजों को प्रदर्शित करने के लिए आया जिनके माध्यम से राजकुमारों ने इस प्रकार का अनुग्रह किया। बाद में यह कुलपतियों द्वारा जारी किए गए सभी गंभीर दस्तावेजों पर लागू हुआ, विशेषकर उन दस्तावेजों पर जिनमें संप्रभुओं के बीच समझौते शामिल थे। विवरण के लिए देखें, हेराल्ड निकोल्सन, *कूटनीति,* ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, 193, पृ. 26–28

7. डरेक, डी; *सर हेराल्ड निकोलसन और अन्तर्राष्ट्रीय संबन्ध : व्यवहारिक सिद्धान्तकार,* ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय प्रेस, ऑक्सफोर्ड, 2005.

8. दिनेश, ''कूटनीति : संकट प्रबंधन में अर्थ, प्रकृति, कार्य और भूमिका'', स्रोत टिकल लाइब्रेरी डाट कॉम।

9. सी.एम. कॉस्टेरिनो, ऑन द वे टू डिपलोमेसी : मार्डन ऐपोलिस, मिनेस्ट्रा विश्वविद्यालय प्रेस, मिनेस्ट्र, 1996, पृ. 78

10. लेरा हालबर्ड, *ऐ कनसेप्चुअल हिस्ट्री ऑफ डिपलोमेसी,* सेज, दिल्ली, 2016, पृ. 30

11. *एनसाइक्लोपीडिया ऑफ ब्रिटेनिका,* ऐन्ड्री बैल, 2010. यद्यपि इस संदर्भ में अनेक विद्वानों ने अलग–अलग मत व्यक्त किए हैं फिर भी अधिक जानने के लिए इसी संदर्भ के ऐतिहासिक विवरण वाले अध्याय को देख सकते हैं।

12. ऐदम वाटसेन, *डिपलोमेसी : द डायलॉग बिटविन स्टेट्स,* मैयेन, लंदन, 1987, पृ. 20

13. ई.एम. स्टोव, *कूटनीतिक अभ्यास के लिए एक मार्गदर्शिका,* लोंगमैन, लंदन, 1957, पृ. 1

14. ई.ए.जे. जोर्हांसन, (संपा.) *कूटनीति के आयाम,* जॉन हाकिंस प्रेस, बल्टीमोर, 1964, पृ. 11

15. मार्गेन्थाऊ, संख्या 4, पृ. 122. तथा अधिक जानने के लिए देखें फंगई पी. मुरोंगबुदली, ''कूटनीति की अवधारणा की उत्पत्ति का पता लगाएं?'' ऐकेडमिया ऐड.

16. उद्‌धृत, लेक ड्रेब, ''रक्षा कूटनीति : विदेश नीति के कार्यान्वयन और राज्य की सुरक्षा के लिए एक महत्वपूर्ण उपकरण'', *सुरक्षा एवं रक्षा त्रैमासिक,* वा.20, संख्या 3, 2018, पृ. 1, तथा एच. बटरफील्ड, ''द न्यू डिप्लोमेसी एंड हिस्टोरिकल डिप्लोमेसी'', एच. बटरफिल्ड और एम. वाइट (संपा.) *राजनयिक जाँच,* एलन और अनविन, लंदन 1966, ए. ग्राउड, ''कूटनीति : पुरानी और नवीन'', *विदेशी मामले,* वा 23, सं. 2, 1945.

17. उधृत, के. एस. राणा, कूटनीति के अन्दर मानस, 2006, पृ. 26, तथा एफ. गिलवर्ट, 21वीं शताब्दी की नई कूटनीति'', *विश्व राजनीति,* वा. 4 संख्या 1, 1951, तथा नोह वेबस्टर्स, ए डिक्शनरी ऑन द इंग्लिश लैंगुवेज, जार्ज गॉडबिन एण्ड संस, हार्टफोर्ड, 1817.

18. वही; पृ. 26, तथा एस. सासोन, ''पुरानी और नवीन कूटनीति : फिर से एक बहस शुरू हुई'', *अन्तर्राष्ट्रीय अध्ययन की समीक्षा,* वा. 14, अंक. 3, 1988.

19. ए.एफ. के. आर्गेन्सकी, *वर्ल्ड पॉलिटिक्स,* अलफ्रेड ए. नॉक, न्यूयार्क, 1968, पृ. 341. आर्गेन्सकी मिशिगन विश्वविद्यालय में राजनीति विज्ञान के प्रोफेसर तथा सामाजिक अनुसंधान में वरिष्ठ शोध वैज्ञानिक बने।

20. विलियम सी. ओल्सन, *अन्तर्राष्ट्रीय संबन्धों का सिद्धान्त और अभ्यास,* अप्रेंटिस हाल, न्यूजर्सि, 1991, पृ. 60.

21. जी.एस. स्मिथ, ''कूटनीति का पुनः अविष्कार : एक आभाषी जरूरत'', यह लेख अमेरिकन शान्ति संस्थान, वाशिंगटन पर उपलब्ध है। 1999

22. आर.पी. बार्स्टन, *आधुनिक कूटनीति,* लॉंगमैन, लंदन, 1988, पृ. 1

23. के.एम. फणिकर, *कूटनीति के सिद्धान्त एवं व्यवहार,* ऐशिया पब्लिकेशन, बॉम्बे, 1957, पृ. 1

24. आर.बी. मावट, *कूटनीति एवं शान्ति,* विलियम एण्ड नोरमेट, लंदन, 1935, पृ. 16

25. वही, पृ. 66.

26. राबर्ट गेरेला, *आधुनिक राजनयिक अभ्यास में रूझान,* ए गफर, अमेरिका, 1969, पृ. 24

27. मैगलहेस डी. और जोश कलवैट, *द प्योर कन्सेप्ट ऑफ डिप्लोमेसी,* ग्रीनबुड प्रेस, वेस्टमार्ट, 1988, पृ.

28. पाऊल शमि तथा हरबर्ट बटरफिल्ड, ''द इंगलिश स्कूल एण्ड द मोबिलाइजेशनल वयुर्ज ऑफ डिप्लोमेसी'', *अंतर्राष्ट्रीय मामले,* वा. 79, नं. 4, 2003, पृ. 855–878.

29. स्टूवर्ट मरे, ''कूटनीति अध्ययन में प्राप्त लाभ को समेकित करना : एक वर्गीकरण'' *अंतर्राष्ट्रीय अध्ययन परिप्रेष्य,* वा. 9, नं. 1, 2008, पृ. 22–39.

30. जी.आर. बेरिज, *डिप्लोमेसी : थेरी एण्ड प्रैक्टिस,* पालग्रेव, लंदन, 2002. पृ. 1

31. ओ. सादिक और के. सोलोटा, ''20वीं शताब्दी के मोड़ पर कूटनीति की ऐतिहासिक विशिष्टताएँ'', *शादक,* वा. 166, नं. 2, मार्च–अप्रैल 2020. पृ. 49

32. जोसेफ एम. गुएश, ''क्लाजविटियन रणनीतिक सिद्धान्त का एक परिचय : सामान्य सिद्धान्त, रणनीति और आज के लिए उनकी प्रासंगिकता'', *अनंत पत्रिका,* वा. 2, अंक 3, ग्रीष्मकालीन, 2012. तथा इस संदर्भ की विस्तृत व्याख्या के लिए देखें कार्ल वॉन क्लाजविक्प, *ऑन वार,* प्रिंसटोन विश्वविद्यालय मुद्रणालय, न्यू जर्सि, 2008.

33. मैकियावेली के अनुसार राजा को अपनी शक्ति का प्रयोग बड़ी ही निष्ठुरता और अमानवीय तरीकों से करना चाहिए। ये शक्ति के प्रयोग को औचित्यपूर्ण मानते हैं क्योंकि एक शासक को सत्ता में रहना है तो उन्होंने देश के बाहर अपने विरोधियों को परास्त करने के लिए तीन तरीके बताए हैं, प्रथम, विद्रोही समूह को सार्वजनिक रूप से लुटना, द्वितीय वहाँ रणनीतिक रूप से निवास करना, तृतीय, अपने राष्ट्र की संस्कृति तथा कानून व्यवस्था को थोपना। अधिक जानकारी के लिए देखें विनोद कुमार, ''मैकियावेली : ए फर्स्ट मार्डन पॉलिटिकल साईस्टि,'' *इंटरनेशनल जर्नल ऑफ करेंट साईस,* वा. 12, नं. 4, अक्टूबर 2022, पृ. 509–12.

34. जी.एन. रस्तोगी, *पाश्चात्य राजनीतिक चिन्तन,* वी.के. इंडिया इंटरप्राईजेज, 1999, नई दिल्ली.

35. वही.

36. वही.

37. नामर्न डी. मामर्स एण्ड पार्किंस, *इंटरनेशन रिलेशन्स,* 1970, यू.एस.ए., पृ. 155–170.

38. फणिकर, संख्या 23, पृ. 26, तथा अधिक विवरण के लिए देखें, डेफिनेशन, आबजेक्टिव्स एण्ड टूल्स ऑफ फॉरन पालिसी'', *डिप्लोमेसी नेटवर्क,* फरवरी 2023.

39. एम.पी. नूनान, ''मार्गेनयाऊ ऑन डिप्लोमेसी,'' *टेक्सास नेशनल सिक्योरिटी रिव्यू,* फरवरी 27, 2014.

40. दिनेश, "डिप्लोमेसी : मीनिंग, नेचर, फंक्शंस, एण्ड रोल इन क्राइसिस, मैनेजमेंट," स्रोत टिकल लाइब्रेरी. काम.

41. सेम अरसलेन, ''वहाट डीड कार्ल वॉन कलाजविट्ज मीन विद्'' टू स्कयोर पीस इज टू प्रिपेयर फॉर वार'', स्रोत कारा. कोम., (सामानय ब्लाग)

42. दिनेश, संख्या 40, तथा इस विवरण के लिए देखें ''सहायता कूटनीति'', यूनिवर्सिटी ऑफ साऊर्थन केलिफोर्निया, यू.एस.सी. लोक कूटनीति केन्द्र तथा जे.एच. एस.टी., जयामाहा, डिप्लोमेसी इन जेनरल : डेफिनेशन एण्ड मेथड्स, *ग्रीन वेरल,* मुनिसच, 2021.

43. यद्यपि वर्तमान समय में विदेशी सहायता का स्थान संयुक्त उद्यमों ने ले लिया है तथापि इस संदर्भ में अधिक जानकारी के लिए देखें कैरोल लैंकेस्टर, *विदेशी सहायता : कूटनीति, विकास, घरेलू राजनीति,* शिकागो विश्वविद्यालय, 2006.

44. *ई–इंटरनेशनल रिलेशन्स,* 20 जुलाई 2011, पृ. 136–140.

45. लियो बी. पॉऊलाडा, ''द थेयरी एण्ड प्रैक्टीश ऑफ इंटरनेशनल रिलेशन्स, 1974, पृ. 196–199. क्विंसी राइट, *स्ट्डी ऑफ इंटरनेशनल रिलेशंस,* इरविंगटन, यू.एस.ए., 1970, पृ. 159–60, तमन्ना ईस्लाम, रोल रण्ड फंगशन्स ऑफ डिप्लोमेट्स'', रिसर्च गेट, जुलाई 2023, फंगंस ऑफ डिप्लोमेसी एण्ड डिप्लोमेट्स'', *एकेडमिया ब्लाग,* पृ. 1–5.